कौशाम्बी

Mandip Kumar Chaurasiya

Assistant professor

Dept. Of A.I.H. & Archaeology

Patna University,Patna-800005

M.A. Semester-II

Paper/CC – (8) Concept and Technique of Archaeology,Pre and Proto History of Africa & Archaeology Sites

कौशाम्बी (अक्षांश 259, 20' उ., देशान्तर 819, 23' पू.) के ध्वंशावशेष उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद जिले की मंझनपुर तहसील के 'कोसम इनाम' और 'कोसम खिराज' नामक गाँवों के बीच में स्थित हैं। यह पुरास्थल इलाहाबाद शहर से दक्षिण-पश्चिम दिशा में लगभग 52 किमी की दूरी पर यमुना नदी के बायें किनारे पर स्थित है। कौशाम्बी को भारतीय पुरातत्त्व के मानचित्र पर रखने का श्रेय अलेक्जेण्डर कनिंघम को है जिन्होंने सन 1861 ईसवी में यहाँ की यात्रा की थी। अपने सर्वेक्षण के आधार पर वे इस नतीजे पर पहुँचे थे कि कोसम ही प्राचीन कौशाम्बी था।

कौशाम्बी का उल्लेख उत्तर वैदिक काल के ब्राह्मण ग्रन्थों तथा उपनिषदों में मिलता है। 'शतपथ ब्राह्मण' में जनक के समकालिक उद्दालक आरुणि के शिष्य प्रोति कौसुरबिन्दि का उल्लेख कौशाम्बेय के रूप में मिलता है जो संभवतः कौशाम्बी के रहने वाले थे। 'मध्य देश' तथा उसके आगे की ओर आर्य भाषा भाषियों के प्रवास के सन्दर्भ में कौशाम्बी का उल्लेख अनेक बार मिलता है। वाल्मीकि रामायण तथा महाभारत में कौशाम्बी की स्थापना का श्रेय 'कुशाम्ब' को

दिया गया है। पौराणिक परम्परा कौशाम्बी का सम्बन्ध हस्तिनापुर के कुरु राजवंश से जोड़ती है। इस परम्परा के अनुसार अभिमन्यु-पुत्र परीक्षित के बाद पाँचवीं पीढ़ी में निचक्षु के शासन काल में जब हस्तिनापुर गंगा की भयंकर बाढ़ में नष्ट हो गया था, तब उसने कौशाम्बी को राजधानी बनाया था। बौद्ध तथा जैन धर्मों के प्राचीन साहित्य में भी कौशाम्बी का अनेक बार उल्लेख मिलता है। बौद्ध ग्रन्थ 'अंगुत्तर निकाय' के अनुसार छठवीं शताब्दी ई.पू. में कौशाम्बी वत्स महाजनपद की राजधानी थी और इसकी गौतम बुद्ध के काल के छः महत्त्वपूर्ण नगरों में गणना की गई थी; अन्य नगर चम्पा, राजगृह, श्रावस्ती, साकेत तथा वाराणसी थे। छठवीं शताब्दी ई.पू. में उदयन यहाँ के शासक थे। प्रारम्भिक बौद्ध परम्परा के अनुसार गौतम बुद्ध यहाँ दो बार आये थे।

सन् 399 से 414 ईसवी के मध्य भारत की यात्रा पर आये हुए चीनी बौद्ध यात्री फाहियान तथा सन् 629-645 ईसवी के बीच भारत में आये प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग कौशाम्बी आये थे। फाहियान के समय कौशाम्बी में बौद्ध धर्म अवनति पर धा। घोषिताराम वौद्ध बिहार की स्थिति अच्छी नहीं थी। जिस समय ह्वेनसांग कौशाम्बी पहुंचा था, उस समय बौद्ध बिहार ध्वस्त हो चुका था।

इलहाबाद के किले में स्थित अशोक के पाषाण-स्तम्भ पर अंकित लघु स्तम्भ लेख में कौशाम्बी का नाम आता है। प्रतिहार शासक यशपाल के कड़ा अभिलेख में कौशाम्बी का उल्लेख मिलता है। इन साक्ष्यों से इंगित होता है कि उत्तर वैदिक काल से लेकर पूर्व मध्य काल तक इस नगर का अस्तित्त्व था ।

कौशाम्बी में भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण की ओर से सन् 1936-37 में एन.जी. मजूमदार ने उत्खनन कार्य प्रारम्भ किया था लेकिन यह कार्य दो उत्खनन सत्र (1937-38) ही चल पाया था कि मजूमदार की बलूचिस्तान में पुरातात्त्विक अन्वेषण के दौरान हत्या कर दी गयी। मजूमदार ने मुख्यतः अशोक स्तम्भ के पास स्थित क्षेत्र में उत्खनन कार्य कराया था। इलाहाबाद विश्वविद्यालय की ओर से स्वर्गीय जी.आर. शर्मा ने सन् 1949 से लेकर 1964-65 तक यहाँ पर उत्खनन कराया था।

कौशाम्बी के टीले में मानव-आवास के चिह्न लगभग 6.45 किमी की परिधि में फैले हए हैं। कौशाम्बी का टीला एक जटिल रक्षा-प्राचीर (परकोटे) से घिरा हुआ था जो आयताकार रूप में फैली हई है। इस परकोटे का आधार यमुना नदी है जिससे रक्षा-प्राचीर अर्द्ध-वृत्त बनाती है। कौशाम्बी में अभी तक चार विभिन्न क्षेत्रों में उत्खनन हुए हैं :

1. अशोक-स्तम्भ क्षेत्र,

2. घोषिताराम विहार क्षेत्र,

3. पूर्वी प्रवेश-द्वार के पास रक्षा-प्राचीर,

4. राजप्रासाद क्षेत्र ।

अशोक-स्तम्भ क्षेत्र कौशाम्बी के टीले के मध्यवर्ती भाग में जहाँ पर भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण की ओर से एन.जी. मजूमदार ने उत्खनन कराया था, वहाँ पर अशोक का लेख-रहित एक पाषाण स्तम्भ मलवे में दबा हआ मिला था। उस को उसी स्थान पर खड़ा कर दिया गया है। इसलिए इस क्षेत्र को अशोक स्तम्भ क्षेत्र नाम दिया गया है सन् 1949 तथा 1950 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने भी इसी क्षेत्र में उत्खनन कार्य कराया था। इस क्षेत्र में तीन संस्कृतियों के साक्ष्य प्राप्त हुए :

1. चित्रित धूसर पात्र-परम्परा,

2. उत्तरी काली चमकीली पात्र-परम्परा,

3. उत्तर एन.बी.पी पात्र-परम्परा ।

चित्रित धूसर संस्कृति के साक्ष्य छोटे से क्षेत्र से प्राप्त हुए हैं। प्राप्त पात्र-खण्डों की संख्या भी बहुत सीमित है । उत्तरी काली चमकीली पात्र-परम्परा (N.B.P. Ware) से सम्बन्धित निर्माण के आठ स्तर (Structural Periods) इस क्षेत्र से प्रकाश में आये हैं जिनमें से प्रथम पाँच में भवन निर्माण-कार्य में मिट्टी तथा कच्ची ईंटों के प्रयोग के साक्ष्य मिले हैं। ऊपरी तीन निर्माण स्तरों से जो साक्ष्य प्राप्त हुए है उनके आधार पर यह कहा जा सकता है कि कालान्तर में भवनों का

निर्माण पकी हुई ईंटों से होने लगा था। एन.बी.पी. काल के प्राचीन मार्गों (Roads), गलियों (Lanes), नालियों तथा रिहायसी भवनों के विषय में उल्लेखनीय जानकारी इस क्षेत्र के उत्खनन से प्राप्त हुई है। इस क्षेत्र में एन.बी.पी. पात्र परम्परा के बाद भी लोग निवास करते रहे जो मुख्यतः लाल रंग की पात्र परम्परा का उपयोग करते थे। तृतीय काल की संस्कृति के काल-क्रम का निर्धारण कौशाम्बी से प्राप्त मित्र शासकों के सिक्के करते हैं जिन्हें पुरालिपि एवं मुद्रा सम्बन्धी साक्ष्यों के आधार पर द्वितीय शताब्दी ई.पू. में रखने का आग्रह किया गया है। शक पार्थियन तकनीक पर बनी मिट्टी की मूर्तियाँ तथा कुषाणों के सिक्के आदि तृतीय काल ऊपरी स्तरों से मिले हैं। सम्भवतः इस क्षेत्र में आवास की निरंतरता गुप्तकाल तक चलती रही। इस क्षेत्र के उत्खनन से न केवल मिट्टी के बर्तनों के विषय में अपितु मिट्टी की मूर्तियों, सिक्कों तथा अभिलेखों के सन्दर्भ में महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ मिली हैं।

घोषिताराम विहार-क्षेत्र कौशाम्बी के टीले के पूर्वी भाग में घोषिताराम विहार के ध्वंशावशेष विद्यमान हैं। प्राचीन बौद्ध साहित्य में घोषिताराम का उल्लेख अनेक बार किया गया है। प्राचीन बौद्ध साहित्य में उल्लिखित परम्परा के अनुसार एक बार जब गौतम बुद्ध श्रावस्ती में वर्षावास कर रहे थे, तब कौशाम्बी के घोषित नामक सेठ ने अपने दो अन्य सेठ मित्रों कुक्कुट तथा पवारिय के साथ जाकर गौतम बद्ध के दर्शन किये और उनको कौशाम्बी आने के लिए आमंत्रित किया था। घोषित सेठ के आमंत्रण पर तथागत कौशाम्बी आये थे। घोषित सेठ ने गौतम बुद्ध तथा भिक्षओं को ठहराने के लिए जिस विहार का निर्माण कराया था, वह निर्माता के नाम पर घोषिताराम के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

घोषिताराम विहार का उत्खनन इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने सन् 1951 से 1956 ईसवी के बीच में कराया था। घोषिताराम के उत्खनन के फलस्वरूप एक विहार प्रकाश में आया है जिसमें निर्माण के सत्रह स्तर (Structural Periods) प्रकाश में आये हैं। घोषिताराम के क्षेत्र में सम्पन्न हए उत्खनन से पता चलता है कौशाम्बी के इस हिस्से में मानव के आवास की परम्परा उत्तरी काली चमकाली पात्र परम्परा

के प्रचलन के साथ प्रारम्भ हो गई थी क्योंकि इस क्षेत्र के सबसे निचले स्तरों से इस पात्र-परम्परा के पात्र खण्ड उपलब्ध हुए हैं।

घोषिताराम विहार के उत्खनन से प्रस्तर की प्रतिमाएँ, मिट्टी की बहुसंख्यक मूर्तियाँ, सिक्के, अभिलेख तथा मुहरें मिली हैं । यहाँ की प्रस्तर-प्रतिमाओं के अध्ययन से यह पता चलता है कि द्वितीय शताब्दी ई.पू. में जिस समय भरहुत, साँची तथा बोधगया में अमर कलाकृतियों का सृजन हो रहा था, कौशाम्बी का तक्षक (मूर्तिकार) शान्त नहीं बैठा हुआ था | घोषिताराम विहार से प्रस्तर की ऐसी कलाकृतियाँ मिली हैं जिन पर बुद्ध का प्रतीकों के माध्यम से अंकन किया गया है । यहाँ से स्तूप की प्रस्तर-वेदिका के अनेक खण्डित अंश मिले हैं जिनमें से कुछ पर द्वितीय प्रथम शताब्दी ई.पू. की लिपि में लघु आकार के अभिलेख भी अंकित हैं। कौशाम्बी के घोषिताराम विहार से कुषाण काल की लेखयुक्त कतिपय ऐसी प्रतिमाएँ मिली हैं जिनका निर्माण तो मथुरा में हुआ था लेकिन बौद्ध धर्म का एक प्रसिद्ध केन्द्र होने के कारण जिनकी स्थापना भिक्षुणी बुधमित्रा ने कौशाम्बी में करायी थी। गुप्तकाल में जिस तरह मथुरा और सारनाथ में मूर्तिकला की अलग-अलग शैलियाँ थीं, उसी तरह संभवतः कौशाम्बी गुप्त-कला का एक केन्द्र थी। प्रथम शताब्दी से लेकर • पाँचवी-छठवीं शताब्दी ईसवी तक की प्रस्तर-मूर्तियाँ यहाँ से मिली हैं।

घोषिताराम से मृणमूर्तियाँ भी बड़ी संख्या में मिली हैं। इनमें मौर्य-शुंग तथा • शक-पार्थियन कालों की मिट्टी की मर्तियाँ अधिक संख्या में मिली हैं। शक-पार्थियन मृणमूतियों में तिकोनी शिरोवेश-भूषा से युक्त मातृदेवी तथा मृदंग वादक आदि की मिट्टी की मूर्तियाँ उल्लेखनीय हैं। ये ईसा की प्रारम्भिक शताब्दियों में गांगेय क्षेत्र में व्याप्त विदेशी प्रभाव का दिग्दर्शन कराती हैं। गजलक्ष्मी तथा हारीति की आदमकद मृणमूर्तियाँ आकार-प्रकार एव भावाभिव्यक्ति की दृष्टि से अनुपम हैं।

कौशाम्बी के घोषिताराम के उत्खनन से प्राप्त रजत एवं ताम्र आहत मद्राएँ (सिक्के) तथा लेख रहित ढले हए सिक्के पाँचवीं-चौथी शताब्दी ईसवी पूर्व में प्रचलन में आए। इनके अलावा कौशाम्बी के स्थानीय सिक्के, कुषाण तथा मघ

राजाओं के सिक्के विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। प्राचीन भारतीय इतिहास के आर्थिक तथा अन्य पक्षों पर इन से प्रकाश पड़ता है। मणि-माणिक्य, मिट्टी तथा हड्डी के बने हुए मनके बहुत बड़ी संख्या में मिले हैं जो तत्कालीन लोगों के सौंदर्य-बोध के साथ-साथ निर्माता शिल्पियों के हस्तलाघव के मूक साक्षी हैं।

घोषिताराम से जो अनेक छोटे-छोटे अभिलेख मिले हैं उनमें से नन्दियशा का अभिलेख, आयागपट्ट, शतदल प्रदीपलेख, विहार की मुद्रा (Seal) विशेष महत्त्वपूर्ण हैं। आयागपट्ट अभिलेख के अनुसार भदन्त धर के शिष्य भिक्षु फगल ने घोषिताराम में सभी बुद्धों की पूजा के लिए शिला स्थापित करायी थी (भयंतस धरस अंतेवासिस भिक्खुस फगलस, बुधावासे घोषितारामे सबधानां पूजाये शिला कारापिता)। घोषिताराम विहार चूँकि सभी साक्ष्यों के अनुसार कौशाम्बी में ही था इसलिए आयागपट्ट पर उल्लिखित अभिलेख से कौशाम्बी के समीकरण के सन्दर्भ में अब कोई विवाद नहीं रहा। मघ राजवंश के महाराज भद्रमघ के कई अभिलेख भी मिले हैं।

घोषिताराम से प्राप्त पुरातात्त्विक साक्ष्य यह इंगित करते हैं कि छठवीं शताब्दी ईसवी के प्रथम दशक में यहाँ पर हूण आक्रमण हुआ। हूणों की लूट-पाट एवं आगजनी का शिकार घोषिताराम बौद्ध विहार भी हुआ। घोषिताराम के उत्खनन से मिट्टी की दो मुहरें (Seals) मिली हैं इनमें से एक पर तोरमाण नाम प्रति-मुद्रांकित (Counter-Struck) है तथा दूसरी पर हूणराज उत्कीर्ण है। तोरमाण का मध्य प्रदेश के सागर जिले में स्थित एरण नामक स्थान से एक अभिलेख मिला है। जिसकी तिथि सन् 510 ईसवी निर्धारित की गयी है। इस आधार पर घोषिताराम पर आक्रमण का समय सन् 510 से 515 ईसवी के बीच में अनुमानित किया जा सकता है ।

कौशाम्बी की रक्षा-प्राचीर कौशाम्बी में तीसरा उत्खनित क्षेत्र पूर्वी प्रवेश-द्वार के पास स्थित है। यहाँ पर उत्खनन कार्य सन् 1957-59 ईसवी के बीच में कौशाम्बी की रक्षा-प्रणाली के इतिहास के इतिहास के अध्ययन तथा मूल रक्षा-प्राचीर (परकोटे). और बाद के परिवर्तन-परिवर्द्धन की प्रकृति एवं प्राचीनता का पता

लगाने के उद्देश्य से किया गया था। पूर्वी प्रवेश द्वार के समीपवर्ती क्षेत्र में हुए उत्खनन से रक्षा-प्राचीर के अतिरिक्त सांस्कृतिक जमाव के सन्दर्भ में भी नवीन साक्ष्य उपलब्ध हुए हैं। कौशाम्बी के तीन ओर एक रक्षा प्राचीर (परकोटा) थी जिसकी ऊँचाई आस-पास के समतल मैदान से 9 से 10 मीटर के बीच में मिलती है। रक्षा-प्राचीर में उत्तर-पश्चिम तथा उत्तर-पूर्व में बने हुए बुर्जी (Towers) की ऊँचाई 21.35 मीटर तक है। परकोटे के तीन ओर गहरी खाई थी। परकोटे में पूर्व, उत्तर तथा पश्चिम दिशाओं में कल मिलाकर ग्यारह द्वार थे जिनमें से पाँच प्रमख द्वार थे तथा छः गौड़ द्वार (Subsidiary Gates) थे। उत्तर दिशा में एक तथा पूर्व, और पश्चिम दिशाओं में दो-दो मख्य-द्वार थे। पूर्व और पश्चिम दिशा के मुख्य द्वारों की कुछ प्रमुख विशेषताएँ उल्लेखनीय है। पूर्व तथा पश्चिम दिशा के मुख्य द्वार यमुना नदी के समानान्तर स्थित थे। पूर्वी द्वार के सामने बाँध की तरह का मिट्टी का आज एक टीला जैसा है जो प्रमुख द्वार के मार्ग के लिए आवरण प्राचीर (Curtain wall) का काम करता था। इस बाँध की अधिकतम लम्बाई 105 मीटर तथा चौड़ाई 27 मीटर है। इस बाँध और एरकोटे के बीच में 7 50 मीटर चौड़ा एक मार्ग था। बाँध से लगभग 75 मीटर की दूरी पर खाई (Moat) के दूसरी ओर 72.50 मीटर लम्बा और 27 मीटर चौड़ा एक बुर्ज था। इस भाग में खाई की अधिकतम चौड़ाई 45 मीटर थी।

पूर्वी प्रवेश द्वार के पास के क्षेत्र किये गए सघन पुरातात्विक अन्वेषण से यह ज्ञात हुआ कि रक्षा-पाचीर के ऊपर का दक्षिणी दर्ज, आवरण प्राचीर के पास परकोटे का अंतिम भाग ये सभी पूर्व से पश्चिम की ओर जाने वाली एक सीधी रेखा पर थे, इस क्षेत्र के उत्खनन से निर्माण के पचीस स्तर (Structural Periods) प्रकाश में आये है जिन्हें चार सांस्कृतिक कालों में विभाजित किया गया है। प्रथम निर्माण काल से लेकर पच्चीसवें निर्माण काल तक मानव-आवास के पुरातात्विक अवशेषों का कुल जमाव 16.50 मीटर मोटा है। यह जमाव इस नगर के मानव-आवास के इतिहास का ऊध्र्वाधर (Vertical) लेखा-जोखा है। पचीस में से दो निर्माण-स्तर रक्षा-प्रणाली के पूर्व के काल से सम्बन्धित हैं, बाईस निर्माण-काल (Structural Periods) पाँच विभिन्न रक्षा-प्राचीरों से सम्बन्धित है। पछीसवाँ निर्माण काल रक्षा-प्रणाली के

ध्वस्त हो जाने के बाद के काल का है। प्रथम रक्षा-प्राचीर के साथ सात निर्माण काल (3 से लेकर 9 तक), द्वितीय रक्षा प्राचीर के साथ पाँच (10 से 14 तक), तृतीय रक्षा-प्राचीर के साथ दो (15 एवं 16), चतुर्थ रक्षा-प्राचीर के साथ तीन (17 से 19 तक) और पाँचवीं रक्षा-प्राचीर (Rampart) के साथ पाँच निर्माण-काल (20 से लेकर 24 तक) सम्बन्धित हैं।

कौशाम्बी में रक्षा-प्राचीर क्षेत्र में मानव के आवास के प्रारम्भिक साक्ष्य प्राकतिक भमि (प्रयुक्त भूमि) पर मिलते हैं। प्रथम निर्माण-स्तर अस्त-व्यस्त अवस्था में मिला है। यह अत्यन्त कठोर कंकड़ से यक्त मिट्टी का बना हुआ है। दूसरे निर्माण-स्तर में रेतीला जमाव मिला है। जो संभवतः बाढ़ का द्योतक है। तीसरा निर्माण-काल कौशाम्बी नगर के इतिहास में उल्लेखनीय है। यह वह काल था जब बरती के चारों और प्रथम रक्षा-प्राचीर का निर्माण किया गया था। प्रथम रक्षा प्राचीर प्रमुख पुरास्थल (Rampart I) का निर्माण कठोर एवं गुथी हुई मिट्टी से किया गया था। यह ध्यान देने योग्य है कि प्रथम परकोटे में मानव-निर्मित मृदभाण्डों के टुकड़ों और मानव से सम्बन्धित अन्य किसी भी प्रकार के पुरावशेषों का पूर्ण अभाव था। प्रथम रक्षा-प्राचीर से सम्बद्ध चौथे निर्माण-काल में सात जल-निकास छिद्रों (Weep-holes) का निर्माण किया गया था। इस रक्षा-प्राचीर के बाहरी भाग में तेज ढलान है जिसमें बाहर से ईंटों की छल्ली लगा कर अथवा चिनाई कर के ढलवा खडंजा (Revetment) लगाया गया था।

कौशाम्बी का पाँचवाँ निर्माण-काल सरक्षा-व्यवस्था के विकास की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। इस काल में 'परिखा' (Moat) या खाईं का उत्तर, पूर्व तथा पश्चिम का आर निमाण किया गया था । दक्षिण की ओर याना नदी प्राकृतिक रूप में सरक्षा प्रदान करती थी। सहायक रक्षा-प्राचीर (Subsidiary Rampart) का निर्माण भी किया गया था। प्रमुख पूर्वी प्रवेश-द्वार से जाने वाला प्रारम्भिक मार्ग वन्द कर दिया गया था तथा नये मार्ग की नींव डाली गयी और सड़क के स्तर को ऊंचा किया गया था।

द्वितीय रक्षा-प्राचीर (Rampart 2) के आरम्भिक चरण - दसवें निर्माण-काल में बड़े पैमाने पर निर्माण-कार्य हुआ जिससे इस क्षेत्र के भवनों तथा रक्षा-प्राचीर की योजना में आमूल-चूल परिवर्तन किये गए थे। परकोटे को लगभग 1.80 मीटर तक ऊँचा किया गया। सहायक रक्षा-प्राचीर तथा प्रमुख रक्षा-प्राचीर के बाहरी भाग के बीच के क्षेत्र को मिट्टी, बालू तथा कूड़ा-करकट से पाट कर भर दिया गया था। परिखा को पुनः गहरा किया गया था। जल-निकास नाली प्रथम (Drain 1) भी इसी काल में निर्मित हुई थी। रक्षक-कक्षों का निर्माण किया गया था। द्वितीय रक्षा-प्राचीर संभवतः एक भयंकर अग्निकाण्ड के फलस्वरूप विनष्ट हुई क्योंकि इसके सबसे ऊपरी स्तर से राख तथा कोयले के ढेर मिले हैं। यहाँ से बड़ी संख्या में दोहरी नोक वाले बाण-फलक (Double Tanged arrow-heads) मिले हैं। ये सभी साक्ष्य द्वितीय परकोटे के विनष्ट हो जाने के सूचक है।

तृतीय रक्षा-प्राचीर के साथ दो निर्माण-काल सम्बद्ध हैं। इस चरण में रक्षा प्राचीर के निर्माण के साथ कौशाम्बी की सुरक्षा-प्रणाली का पूर्ण विकास हो गया था। इस काल में रक्षा-प्राचीर की चौड़ाई में कोई विशेष परिवर्तन नहीं किये गए, केवल

उसकी ऊँचाई को लगभग 1.55 मीटर बढ़ाया गया था यद्यपि तृतीय रक्षा-भित्ति (Revetment 3) का निर्माण किया गया था किन्तु रक्षा-प्राचीर में बाहर की ओर से पकी हुई ईंटों की रक्षा-भित्ति के निर्माण की प्रणाली का परित्याग कर दिया गया था। रक्षक-कक्ष, पार्श्व दीवालें (Flank walls) तथा रक्षा-प्राचीर के ऊपर दोनों तरफ विद्यमान बुर्ज अब सुरक्षा के प्रमुख अंग थे। पन्द्रहवें निर्माण-काल से सम्बद्ध महत्त्वपूर्ण खोज पुरुषमेध के लिए निर्मित श्येनचिति है। तृतीय रक्षा-प्राचीर से सम्बद्ध सोलहवें निर्माण-काल में रक्षा प्राचीर की मूल योजना में कोई परिवर्तन नहीं हुआ.।

कुछ दीवालों की मरम्मत की गयी तथा कतिपय नवीन दीवालों का निर्माण किया गया था। इस काल के विभिन्न स्तरों से मित्र राजवंश के बहुसंख्यक सिक्के भी मिले है। तृतीय रक्षा-प्राचीर का अन्त संभवतः किसी आक्रमण से हआ। रक्षा-प्राचीर में राख के हर तथा मानव हटियों के टुकड़े एवं कपालों के कतिपय खण्डित हिस्से

मिले है। उपलब्ध साक्ष्यों के अनुसार उत्तरी काली चमकीली पात्र-परम्परा का अन्त भी इसी तृतीय रक्षा प्राचीर के साथ हुआ था।

चतुर्थ रक्षा-प्राचीर के साथ तीन निर्माण-काल सम्बद्ध हैं। रक्षा-प्राचीर के परकोटे की मरम्मत तथा ऊंचा उठाये जाने का कार्य, दीवालों का पुनर्निर्माण तथा नवीन दीवालों का निर्माण एवं फर्श के बनाये जाने का कार्य बड़े पैमाने पर हुआ। यह रक्षा प्राचीर एक आक्रमण के फलस्वरूप विनष्ट हुई थी।

पाँचवीं रक्षा-प्राचीर के साथ पाँच निर्माण-काल सम्बद्ध हैं। इस काल में परकोट की ऊंचाई अन्तिम बार बढ़ाई गई। भूमि समतल की गई. दीवालों को नये रूप में निर्मित करके उनके ऊपर रक्षक-कक्षों को बनाया गया। चौवीसवें निर्माण काल में कौशाम्बी नगर में व्यापक पैमाने पर विनाश हुआ। सम्पूर्ण क्षेत्र जला दिया गया और लगभग सभी मकान धराशायी कर दिये गए। यह विनाश-लीला हूणों के हिंसात्मक आक्रमण का परिणाम थी जिसने कौशाम्बी नगर की नींव को हिला डाला था। वे रक्षा-प्राचीरें जो तृतीय निर्माण-काल से लेकर चौबीसवें निर्माण-काल तक कौशाम्बी की रक्षा करती रही थीं, उनका सर्वदा के लिए अन्ततः परित्याग कर दिया गया था तथा वाद में नगर अपने शेष जीवन काल में सुरक्षा-विहीन ही 'अस्तित्त्व में रहा।

कौशाम्बी में रक्षा-प्राचीर या किलेबन्दी का प्रारम्भ लगभग 1023 ई.पू. में • हुआ। प्रथम खाई (Moat) तथा उसकी समकालिक सड़क का निर्माण लगभग 885 ई.पू. में, द्वितीय रक्षा-प्राचीर लगभग 535 ई.पू. में और रक्षक कक्षों की व्यवस्था की "शुरुआत 325 ई.पू. में हुई थी; तृतीय रक्षा-प्राचीर 185 ई.पू. में तथा चतुर्थ 45 ई.पू. में निर्मित हुई थी। पाँचवीं रक्षा-प्राचीर का निर्माण लगभग 165 ईसवी में और विनाश लगभग 515 ईसवी में हुआ था। तृतीय रक्षा-प्राचीर का निर्माण संभवतः मित्र राजवंश के शासन काल और पाँचवीं रक्षा-प्राचीर का निर्माण मघ राजवंश के शासन में हुआ था

कौशाम्बी में पूर्वी-प्रवेश-द्वार पर किये गए उत्खनन से चार संस्कृतियों के विषय में साक्ष्य मिले हैं जिनका वर्गीकरण मिट्टी के बर्तनों के आधार पर किया गया ।

प्रथम सांस्कृतिक काल की प्रमुख पात्र-परम्पराओं में लाल पात्र-परम्परा है जिस पर कभी-कभी चित्रण-अभिप्राय मिलते हैं। कृष्ण-लोहित पात्र-खण्ड भी प्रथम सांस्कृतिक काल से मिले हैं। पात्र चाक पर बने हुए हैं जिन पर प्रलेप (Slip) लगाने के साक्ष्य मिलते हैं। प्रमुख पात्र-प्रकारों में कटोरे, थालियाँ तथा तसले (Basin) आदि हैं। प्रथम से लेकर चतुर्थ निर्माण-काल इस प्रथम सांस्कृतिक काल से सम्बद्ध हैं। पुरातात्त्विक आधार पर काल-क्रम 1165 ई.पू. से 885 ई.पू. के बीच में निर्धारित किया गया है।

द्वितीय सांस्कृतिक काल चित्रित धूसर पात्र-परम्परा से सम्बन्धित है। पाँचवें से लेकर आठवें तक चार निर्माण-काल इससे सम्बन्धित हैं। ऊपरी गंगा घाटी में मिलने वाली चित्रित धूसर पात्र-परम्परा तथा कौशाम्बी की इस तरह की पात्र-परम्परा के बीच कछ विभिन्नताएँ दृष्टिगोचर होती हैं। कौशाम्बी से प्राप्त पात्र-खण्ड अपेक्षाकृत मोटे हैं। इनका धूसर वर्ण कुछ हल्के रंग का है तथा चित्रण-अभिप्राय भी कम मिलते हैं। थाली, कटोरे प्रमुख पात्र-प्रकार हैं। चित्रित धूसर पात्र-परम्परा के साथ कष्ण-लोहित मदभाण्ड परम्परा (Black and Red Ware) बहुतायत से मिलती है। द्वितीय सांस्कृतिक काल का काल-क्रम 885 ई.पू. से लेकर 605 ई.पू. के बीच निर्धारित किया गया है।

कौशाम्बी के उत्खनन-कार्य के संचालक स्वर्गीय जी.आर. शर्मा के अनुसार लेख-रहित ढले हुए सिक्कों का सर्वप्रथम प्रचलन नवीं शताब्दी ई.पू. (885-815 ई.पू.) में हो गया था। आहत सिक्कों का चलन उसके बाद में हुआ। इन निष्कर्षों से अधिकांश विद्वान् सहमत नहीं है। कौशाम्बी के लेख-रहित ढले हुए ताँबे के सिक्कों का समय कतिपय विद्वान् तीसरी शताब्दी ई.पू. मानते हैं।

तृतीय सांस्कृतिक काल उत्तरी काली चमकीली पात्र-परम्परा से सम्बन्धित है। उत्तरी कृष्ण-मार्जित (ओपदार) मृदभाण्ड परम्परा इस पुरास्थल की वैभवपूर्ण स्थिति की सूचना देती है। इस काल का कालानुक्रम 605 ई.पू. से 45 ई.पू. के बीच निर्धारित किया गया है।

चतुर्थ सांस्कृतिक काल में सत्रहवें से लेकर पच्चीसवें निर्माण काल (नौ) तक आते हैं। इस काल में उत्तरी काली चमकीली पात्र-परम्परा का पूर्ण अभाव मिलता है। लाल रंग की पात्र-परम्परा (Red Ware) इस काल की प्रमुख मृदुभाण्ड परम्परा है। थाली, कटोरे, घड़े, कलश, मटके, कड़ाही, तसले तथा ढक्कन आदि प्रमुख पात्र-प्रकार हैं। इसका कालानुक्रम 45 ई.पू. से लेकर 585 ईसवी के बीच निर्धारित किया गया है।

राजप्रासाद क्षेत्र कौशाम्बी का चतुर्थ उत्खनन यमुना नदी से लगे हुए टीले के . दक्षिणी-पश्चिमी भाग में सन् 1960 ईसवी में सम्पन्न हुआ। इस उत्खनित क्षेत्र को " 'राजप्रासाद क्षेत्र' के नाम से अभिहित किया गया है।

उत्खनन से दीवालों के जो साक्ष्य मिले हैं वे राजमहल की निर्माण सम्बन्धी वास्तुकला के विकास में चार अवस्थाओं का संकेत करते हैं जिनको दस उपकालों में विभाजित किया गया है। प्रारम्भिक काल में राजमहल की दीवाल के निर्माण में अनगढ़ पत्थरों का उपयोग किया गया था। इस काल का समय आठवीं से छठवीं शताब्दी ई.पू. के बीच में माना गया है। द्वितीय काल में भली-भाँति गढ़े हुए 66 x 53 x 20 सेमी आकार के पत्थरों का उपयोग राजमहल की दीवालों के निर्माण में किया गया था। दीवालों की चिनाई में प्रयुक्त वाहर पत्थर गढ़े हए थे किन्तु भीतरी भाग में हर तरह के रोडे (Rubble) भर दिये गए थे। इस का कालक्रम छठवी शताब्दी ई.पू. से द्वितीय शताब्दी ई.पू. के बीच में निर्धारित किया गया है। यह दीवाल द्वितीय शताब्दी ई.पू. में किसी समय तोड़-फोड़ दी गई थी तथा स्तम्भों को धराशायी कर दिया गया था।

प्रस्तर तथा मिट्टी की मूर्तियाँ, सिक्के, अभिलेख, मुहरें, लोहे के बाणाग्र (Arrow-heads) तथा अन्य लौह उपकरण एवं मनके वहाँ से प्राप्त उल्लेखनीय पुरावशेष हैं। कौशाम्बी प्राचीन काल में राजनीतिक तथा सांस्कृतिक गतिविधियों का प्रमख केन्द्र थी। उत्खनन से प्राप्त साक्ष्य साहित्यिक परम्परा की आंशिक रूप में पुष्टि करते हैं।